नई सोच, नया अंदाज

नईदुनिया

जबलपुर, इंदौर, भोपाल (नवदुनिया), ग्वालियर, रायपुर और बिलासपुर से एक साथ प्रकाशित

जबलपुर, शनिवार 16 मार्च 2019

जादू भ्रम या चमत्कार नहीं, यह एक कला है

जादू स्वाभिमान दिवस पर शहर पहुंचे राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जादूगरों ने साझा किए अपने अनुभव

जबलपुर। नईदुनिया रिपोर्टर

दुनिया में चमत्कार जैसा कुछ भी नहीं होता। जो ऐसा कहते हैं वो अंधविश्वास फैलाते हैं। जादू को लेकर कई बार भ्रम की स्थिति होती है जबकि जादू कोई चमत्कार नहीं एक कला है और हम जादूगर इस कला के माध्यम से अंधविश्वास को दूर करने का प्रयास करते हैं। हम जादू के माध्यम से बेटी बचाओ जैसे संदेश देते हैं। समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने की कोशिश करते हैं अपनी कला के माध्यम से। यह कहना है जादू स्वाभिमान दिवस में जादू के करतब दिखाने शहर पहुंचे जादूगरों का। जिसमें राजस्थान से आए शिव कुमार, कोलकाता से आए प्रिंस सिल, बीकानेर से आए मनोज कौशिक और अजमेर से आए जादूगर प्रहलाद राय शामिल रहे।

जादू को मिले कला का दर्जा

जादूगर प्रहलाद राय कहते हैं, सरकार को जादू को कला का दर्जा देना चाहिए। फिल्मी कलाकार एक किरदार निभाते हैं और वापस अपने मूल किरदार में आ जाते हैं। जबकि हम जादूगर तो जादूगर के काल्पनिक किरदार को ही अपना मूल किरदार बना लेते हैं। हमारा ओरिजनल नाम भी हम भूल जाते हैं। जादू अब लुप्त होने वाली कला के रूप में बचा है। यदि जल्दी ही कुछ किया नहीं गया तो एक दिन आएगा कि लोग जादू को याद करके कहेंगे कि जादू कुछ होता था।

जादू के बारे में ही लिखता हूं

जादूगर मनोज कौशिक के बताते हैं कि- मैं बीकानेर से हूं और मेंटल मैजिक करता हूं। मेंटल जादू पूरी तरह एकाग्रता पर आधारित होता है। जिस तरह जब एफएम सुनते हैं तो रेडियो की भी फ्रिक्वेंसी उसी चैनल पर ट्यून करना पड़ती है जिसे सुनना है। ठीक इसी तरह का होता है मेंटल जादू। हम अपनी फ्रिक्वेंसी सामने वाले के साथ ट्यून करते हैं। यह बस करने में काफी समय और मेहनत लगती है। जब मैं 5वीं क्लास में था तब एक मदारी को देखकर जादू सीखा। उसने माचिक को बॉक्स को तोड़ा और फिर जोड़ दिया। घर जाकर मैंने भी किया। कई माचिस खराब की। बहुत डांट भी खाई। लेकिन जादू को सीख ही लिया। गर्वनमेंट जॉब में हूं तो लगातार शो नहीं कर पाता लेकिन मायवी दुनिया ऑनलाइन मैग्जीन है इसमें सिर्फ जादू के बारे में ही लिखता हूं। मुझे लगता है कि जादू एक सर्वोच्च उपमा है।

शहर पहुंचे जादूगर- दाएं से बाएं- ऑरेंज कपड़ों में- जादूगर शिव कुमार, जादूगर प्रह्लाद राय, जादूगर मनौज कौशिक, जादूगर प्रिंस सिंल।

जादू की पत्रिका चुरा कर पढ़ता था

जादूगर प्रिंस सिल ने बताया कि- मैं कोलकाता से हूं तो वहां तो जादू गॉड फादर पीसी सरकार रहे हैं। बस उन्हीं से प्रभावित रहा। जादू की पत्रिका चुरा कर पढ़ा करता था। जादू के लिए पढ़ाई जरूरी थी ऐसा सरकार सर ने कहा तो मैंने पढ़ाई भी की। 1974 में मुंबई के नाइट क्लब से जादू के शो की शुरुआत की। फिर अचानक आइडिया आया कि बल्ब चबाकर मुंह से जलते हुए बल्ब निकालूं। इसके लिए प्रैक्टिस किया। इसके बाद .22 राइफल से निकली बुलेट को मुंह से पकड़ने के शो का अभ्यास किया। लेकिन इसका पहला शो फ्लॉप रहा क्योंकि कहा गया कि .22 से आवाज ज्यादा नहीं आई। अब इसे शो को 12 बोर की गन के साथ करता हूं।

जादू भारत के मनीषियों की देन

जादूगर शिव कुमार के अनुसार- जादू प्राचीन भारत के मनीषियों की देन हैं। यह हमारी अनुपम सांस्कृतिक धरोहर है। जो उपेक्षा का दंश झेल रही है। यह कला कुछ गिने-चुने जादूगरों के कारण ही जीवित है। ऐसे में सरकार को जादू की कला को संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए। मैं स्टंट भी करता हूं लेकिन साथ में जादू भी करता हूं। जादू के माध्यम से 2 घंटे तक दर्शकों को लगातार बांधे रखना आसान बात नहीं है। शो में मनोरंजन नहीं होगा तो लोग देखेंगे नहीं। यह जादूगर की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने शो में मनोरंजन की कमी न होने दे।

जादू के करतब देख अचरज में पड़े दर्शक

कभी बीच से कटे ताश के पत्ते जुड़ गए तो कहीं टूटी हुई माला के अलग-अलग मोती एक धागे में आ गए। ऐसे ही जादू के एक से बढ़कर एक करतब दिखाकर जादूगरों ने दर्शकों का खूब मनोरंजन किया। अवसर था जादू स्वाभिमान दिवस के अवसर पर शहीद स्मारक प्रेक्षागृह में हुए जादू प्रदर्शन का। जादू स्वाभिमान दिवस शहर के जादूगर एस के निगम के जन्म दिवस पर मनाया जाता है। इस अवसर पर मंत्री लखनघोरिया, विधायक विनय सक्सेना, समाज सेवी बाबू विश्वमोहन, इंजीनियरि डीसी जैन, चमन श्रीवास्तव उपस्थित रहे। राजस्थान से आए शिव कुमार, कोलकाता से प्रिंस सिल, बीकानेर से मनोज कौशिक, अजमेर से आए जादूगर प्रह्लाद राय ने जादू के करतब दिखाए। अतिथि जादूगरों का मोतियों की माला व अभिनंदन पत्र से स्वागत किया गया। आयोजन को सफल बनाने में प्रतुल श्रीवास्तव, विजय जायसवाल, पवन समदड़िया, डीएस दुग्गल, हरीश कुमार, बच्चन श्रीवास्तव, अंकिता निगम, नीतू पांडे व अन्य का सहयोग रहा।